IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

महाकवि कालिदास के जीवन से आधारित कुछ महत्वपूर्ण बातें:*

MANIDIPA BHATTACHARJEE

- ABSTRACT:

Abhijnana Shakuntalam" is considered one of the most important works of Indian literature, primarily because it is a masterpiece of Sanskrit drama by Kalidasa, beautifully depicting a poignant love story between King Dushyanta and Shakuntala, showcasing themes of love, duty, and the power of nature, while also being recognized for its exquisite poetic language and rich character development, making it a landmark piece in world literature as well; it was even one of the first Indian plays to be translated into Western languages, significantly introducing Indian culture to the West.

पुराने ज़माने में, जब कवियों की गणना की जा रही थी, तब कालिदास को कनिष्ठिका पर विराजमान किया गया। उनसे तुलना हो सके, इतने प्रतिभाशाली कवी का आज तक अभाव होने के कारण कनिष्ठिका के बाजू की उंगली का अनामिका यह नाम अर्थपूर्ण हो गया।

कालिदास – भारतीय लेखक

1. कालिदास को शास्त्रीय संस्कृत साहित्य में सबसे महान कवियों और नाटककारों में से एक माना जाता है।
2. उन्हें □शकुंतला□, □मेघदूत□ और □रघुवंश□ जैसी उत्कृष्ट कृतियों के लिए जाना जाता है, जो उनकी काव्य प्रतिभा और कहानी कहने के कौशल को दर्शाती हैं।
3. कालिदास की कृतियाँ प्रेम, प्रकृति, पौराणिक कथाओं और मानवीय अनुभव के विषयों को दर्शाती हैं, जो भारतीय साहित्य का सार प्रस्तुत करती हैं।
4. ऐसा माना जाता है कि वे चौथी या पांचवीं शताब्दी ई. में रहे थे, तथा उनकी सटीक पहचान और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि विद्वानों के बीच बहस का विषय बनी हुई है।

कालिदास का जीवन और पृष्ठभूमि

□ कुछ विवरणों के अनुसार, कालिदास का जीवन और पृष्ठभूमि रहस्य में डूबी हुई है, और उनके नाम के इर्द-गिर्द कई किंवदंतियाँ और मिथक हैं।

 कालिदास का जन्म चौथी या पांचवीं शताब्दी में उज्जैन नामक गांव में हुआ था, जो आधुनिक भारत के मध्य प्रदेश में स्थित है। उनका जन्म एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था और उन्होंने साहित्य, दर्शन और धर्म में शास्त्रीय शिक्षा प्राप्त की थी।

 कालिदास का प्रारंभिक जीवन आसान नहीं था और उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। कुछ किंवदंतियों का दावा है कि वह अनपढ़ थे और उनके ज्ञान की कमी के कारण उनका मजाक उड़ाया जाता था।

 हालाँकि, उन्होंने खुद को शिक्षित करने का दृढ़ संकल्प किया और अंततः भारत के सबसे प्रसिद्ध कवियों में से एक बन गए। कालिदास को राजा विक्रमादित्य का संरक्षण प्राप्त था, जो उज्जैन पर शासन करने वाले एक महान राजा थे।

कालिदास की प्रमुख रचनाएं ये हैं:

अभिज्ञान शाकुन्तलम्, विक्रमोर्वशीयम्, मालविकाग्निमित्रम्, रघुवंशम्, कुमारसंभवम्, मेघदूतम्, ऋतुसंहार.

कालिदास की रचनाओं के बारे में कुछ और बातें:

१/कालिदास की रचनाओं में श्रंगार रस का बखूबी वर्णन है.

२/कालिदास की रचनाओं में ऋतुओं का भी उल्लेख है.

३/कालिदास की रचनाओं में संगीत का प्रमुख स्थान है.

४/कालिदास की रचनाओं में आदर्शवादी परंपरा और नैतिक मूल्यों का ध्यान रखा गया है.

५/कालिदास की रचनाओं में अलंकार युक्त, सरल और मधुर भाषा का इस्तेमाल किया गया है.

- निष्कर्ष:

कालिदास को व्यापक रूप से सभी समय के सबसे महान संस्कृत कवि और नाटककार के रूप में माना जाता है। भारत में उनके सभी प्रशंसक, जिनमें ममता, आनंदवर्धनाचार्य और अभिनव गुप्त जैसे उत्तर-कालिक कवि और आलोचक शामिल हैं, उनकी प्रशंसा करते हैं। उनकी काव्य शैली ने बाद के सभी कवियों के साथ-साथ बीसवीं सदी के वर्तमान कवियों को भी प्रभावित किया।

कालिदास के कार्य को मान्यता देने के लिए भारत सरकार मध्य प्रदेश में शास्त्रीय नृत्य, काव्य, शास्त्रीय संगीत, प्लास्टिक कला और कला में अच्छा प्रदर्शन करने वालों को कालिदास सम्मान देती है।

संस्कृतकाव्यशास्त्रेतिहासः डॉ. जगदीश चन्द्र मिश्रा - चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान -प्रथमसंस्करण - 2002 ।

संस्कृत परिवेश और मध्यप्रदेश- डा. निलिम्प त्रिपाठी-नाग पब्लिकेशन, दिल्ली-1997।

संस्कृत साहित्य का इतिहास - डॉ. सच्चिदानन्द तिवारी - शिवांक प्रकाशन- प्रथम संस्करण - 2011 ISBN-978-93-80801-68-1

संस्कृत साहित्य का इतिहास-चौखम्बा वाचस्पति गैरोला विद्याभवन, वाराणसी-1991 ।

संस्कृत साहित्य का इतिहास - बलदेव उपाध्याय-शारदा प्रकाशन, वाराणसी-1978 ।

संस्कृत साहित्य का इतिहास - प्रो. राधावल्लभत्रिपाठी – वि.वि.प्रकाशन-चौक वाराणसी - 2001 ।

संस्कृत साहित्य परिचय - प्रतिभा प्रकाशन- राधावल्लभ त्रिपाठी- प्रथम-संस्करण -1998-ISBN 81-85268-88-6